

**बहुराष्ट्रीय निगमों से आप क्या समझते हैं? भारत में बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका या प्रभावों का वर्णन करें।**

**Or, बहुराष्ट्रीय निगमों से आप क्या समझते हो ? भारत में बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका का विवेचन कीजिये।**

Ans. भारत में बहुराष्ट्रीय निगमों तथा कम्पनियों का इतिहास ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत में आने से प्रारम्भ होता है जो भारत में एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी के रूप में आई थी, इसके बाद अमेरिकन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में तेल एवं पेट्रोल क्षेत्र में ऐसो (ESSO) और कॉलटेक्स (Caltex) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत में वर्ष 1978 में बहुराष्ट्रीय . निगमों एवं कम्पनियों से संबंधित 833 सहायक कम्पनियाँ कार्यरत थीं। भारत में वर्तमान में अनेक बहुराष्ट्रीय निगम कार्यरत हैं जिनका व्यवसाय एवं कारोबार अनेक शाखाओं एवं सहायक कम्पनियों के रूप में भारत के साथ-साथ बाहर अनेक राष्ट्रों तक फैला हुआ है जिनमें सीबा, फिलिप्स इण्डिया लिमिटेड, कोका कोला कम्पनी, कॉलगेट लिव, हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, पौण्ड्स इण्डिया लिमिटेड, ग्लेक्सो इत्यादि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एवं निगम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

वर्ष 1991 में घोषित नवीन आर्थिक नीति के परिणामस्वरूप विदेशी निजी विनियोगों को अनेक सुविधाएँ तथा प्रोत्साहन मिलने के कारण वर्ष 1991-95 की पाँच वर्ष की अवधि में कुल 60 हजार करोड़ रुपये के प्रत्यक्ष पूँजी विनियोग प्रस्तावों को स्वीकृति प्राप्त हुई है जिसमें से वास्तविक पूँजी प्रवाह लगभग 12150 करोड़ का सम्भव हुआ है। वर्तमान में भारत में अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एवं निगमों के आने की प्रवृत्ति बनी हुई है।

साधारण शब्दों में बहुराष्ट्रीय निगम का आशय एक ऐसी कम्पनी या व्यावसायिक संस्था से लिया जाता है जिसके उत्पादन या व्यवसाय और वितरण की क्रियाएँ एक से अधिक राष्ट्रों में फैली हुई होती हैं।

आई. बी. एम. वर्ल्ड ट्रेड कॉरपोरेशन के अध्यक्ष के अनुसार, "एक बहुराष्ट्रीय निगम वह होता है जो (i) अनेक देशों में अपने कार्यों का संचालन करता है, (ii) उन देशों में विकास, निर्माण और अनुसंधान संबंधी कार्य करता है, (iii) जिसका बहुराष्ट्रीय प्रबन्ध होता है और (iv) जिसका स्वामित्व बहुराष्ट्रीय प्रकृति का होता है।"

बी. एल. ओझा के अनुसार, "बहुराष्ट्रीय निगम एक ऐसी संस्था अथवा कम्पनी होती है जिसका व्यवसाय तथा कारोबार अपने जन्म स्थान के देश से बाहर अनेक देशों तक फैला होता है।" इसी वजह से इस प्रकार के निगमों को बहुराष्ट्रीय कम्पनी अथवा अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी / निगम के नाम से पुकारा जाता है।

### बहुराष्ट्रीय निगमों की विशेषताएँ/तत्व (Characteristics / Elements of Multi-Nationals)

1. बहुराष्ट्रीय निगमों के क्रिया-कलाप एक ही राष्ट्र तक सीमित न होकर अनेक राष्ट्रों में फैले हुए होते हैं तथा इनका मुख्य निगम साधारणतया उसी राष्ट्र में होता है जहाँ पर इनका जन्म स्थान होता है तथा अन्य राष्ट्रों में उसकी शाखाएँ या सहायक कम्पनियाँ कार्य करती हैं और इनके स्वामित्व एवं नियंत्रण पर मुख्य निगम का अधिकार होता है।

2. बहुराष्ट्रीय निगमों का आकार बहुत बड़ा होता है, क्योंकि इनमें पूँजी, बिक्री, लाभ, उत्पादन मात्रा, प्रशासन और प्रबन्ध की मात्रा बहुत अधिक होती है।
3. बहुराष्ट्रीय निगमों की अंशपूँजी में स्वामित्व भी अनेक राष्ट्रों में विभाजित होता है।
4. बहुराष्ट्रीय निगमों का प्रबन्ध भी बहुराष्ट्रीय स्तर का होता है, क्योंकि इनके प्रबन्ध मण्डल में अनेक राष्ट्रों के व्यक्ति सम्मिलित होते हैं।
5. बहुराष्ट्रीय निगमों में साधनों का हस्तान्तरण एक ही राष्ट्र तक सीमित न होकर अनेक राष्ट्रों में देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए कच्चा माल निर्मित माल उत्पादन तकनीक तथा प्रौद्योगिकी, प्रबन्धक, कर्मचारी इत्यादि संसाधनों का हस्तान्तरण एक देश तक ही सीमित न होकर अनेक देशों में स्थित अपनी शाखाओं तथा सहायक कम्पनियों तक फैला हुआ होता है।

### भारत में बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका / योगदान/महत्व/प्रभाव (Role/Importance/Impact of Multinational Corporations in India)

गत वर्षों में भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में बहुराष्ट्रीय निगमों तथा कम्पनियों एवं निजी पूँजी विनियोगों अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका देखने को मिली है, जैसाकि निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट है

1. भारत में विदेशी पूँजी विनियोगों में वृद्धि : भारत में गत वर्षों में बहुराष्ट्रीय निगमों तथा निजी क्षेत्र की वजह से विदेशी पूँजी विनियोगों

में लगातार वृद्धि देखने को मिली है। जहाँ वर्ष 1973-74 में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा निगमों की परिसम्पत्तियाँ मात्र 3155 करोड़ रुपये की थीं, वह वर्ष 1985 में बढ़कर 6355 करोड़ रुपये की हो गयीं। भारत सरकार की आर्थिक उदारीकरण की नीति के फलस्वरूप विदेशी पूँजी विनियोगों को प्रोत्साहन मिला है जिसके फलस्वरूप वर्ष 1991 से 2002 तक की 12 वर्षों की अवधि में लगभग 2,84,812 करोड़ रुपये के प्रत्यक्ष विनियोगों के प्रस्तावों को स्वीकृति दी गयी थी।

2. विदेशी प्रत्यक्ष विनियोगों को स्वीकृति तथा वास्तविक प्रवाह में बढ़ोतरी • भारत सरकार द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाने से विदेशी प्रत्यक्ष विनियोगों के प्रस्तावों पर स्वीकृतियाँ प्राप्त हुई हैं, जिससे वास्तविक प्रवाह बहुत देखा गया है।

3. अर्थव्यवस्था के आधारभूत क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका : भारत में गत वर्षों में विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा आधारभूत उद्योगों के विकास में उन्नत प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी ज्ञान प्रदान करने, बड़ी मात्रा में पूँजी विनियोग करने और जोखिम उठाने संबंधी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

4. जोखिम उठाने की शक्ति : भारत जैसे विकासशील देशों के उद्योगपतियों में जोखिम उठाने के साहस का अभाव है, इसलिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा अपने विशाल संसाधनों तथा दीर्घ अनुभव के आधार पर नवीन उद्योगों की स्थापना में जोखिम उठाने में वे अच्छी भूमिका निभाते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में सड़क निर्माण, सौर ऊर्जा विकास, ऊर्जा तथा टेली कम्यूनिकेशन इत्यादि में बहुराष्ट्रीय निगम एवं कम्पनियाँ काफी आगे आ रही है।

5. रोजगार के अवसरों में वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का अच्छा योगदान होने की वजह से भारत में रोजगार के अवसरों में अच्छी वृद्धि सम्भव हुई इनके सहयोग के फलस्वरूप बड़े पैमाने के उत्पादन, वितरण एवं प्रबन्ध व्यवस्था में योगदान के कारण रोजगार के रास्ते काफी खुले हैं। उच्च प्रशिक्षण व्यवस्था के फलस्वरूप भी रोजगार के अवसरों में वृद्धि सम्भव हुई है। भारत में वर्तमान में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा अनेक भारतीयों को रोजगार प्राप्त हुए हैं।

6. शोध तथा विकास में योगदान : बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एवं निगमों में शोध एवं विकास संबंधी कार्य करने की क्षमता होती है तथा इनका लाभ संबंधित समस्त देशों को पूरी तरह प्राप्त होता है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र भी शोध एवं विकास के क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं निगमों से अच्छी तरह लाभान्वित हुए हैं।

7. विपणन में योगदान बहुराष्ट्रीय निगम तथा कम्पनियाँ उपभोग उद्योगों के विकास

और उनके उत्पादों में अधिक रुचि रखते हैं। इन्होंने भारत के विशाल उपभोक्ता बाजार में अनेक प्रकार की उपभोग सामग्री का विक्रय करके अच्छे लाभ अर्जित किये हैं। उदाहरणार्थ इनके द्वारा हिन्दुस्तान लीवर, पेप्सी कोला, कोका कोला, ग्लेक्सो की दवाइयाँ, सीबा, कोलगेट • पॉमोलिव इत्यादि उपभोक्ता पदार्थ बेचे गये हैं। इतना ही नहीं, इन निगमों एवं कम्पनियों के द्वारा विदेशों में अपने उत्पादों का विक्रय करके समय-समय पर निर्यात भी बढ़ाये गये हैं।



8. प्राकृतिक साधनों के विदोहन में सहयोग : भारत सरीखे विकासशील राष्ट्रों में प्राकृतिक संसाधनों की बाहुल्यता पायी जाती है, लेकिन पूँजीगत संसाधन, तकनीकी विकास और प्रशिक्षित कर्मचारियों के अभाव में देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का पूरी तरह विदोहन सम्भव नहीं हो पाता है। बहुराष्ट्रीय निगमों एवं कम्पनियों में ये समस्त साधन एवं सुविधाएँ पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलती हैं, जिसके फलस्वरूप उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का भारत में अच्छी तरह सदुपयोग सम्भव हो सका है। इसी क्रम में भारत में खनिज तेल की खोज और उसके समुचित विदोहन में बहुराष्ट्रीय निगमों एवं कम्पनियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

9. तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षण में सुविधा: बहुराष्ट्रीय निगमों एवं कम्पनियों के पास उत्पादन की उन्नत तकनीक होती है जिसकी वजह से वे अनुसंधान और विकास से प्रौद्योगिकी का विकास कर सकते हैं। इसलिए विदेशी पूँजी विनियोगों के साथ-साथ विदेशी बहुराष्ट्रीय निगमों की उन्नत तकनीक भी देखने को मिलती है। भारत में पेट्रोलियम, औषधि, रसायन और इंजीनियरिंग तथा इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में उन्नत तकनीक के काफी अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं तथा इनमें काम करने वाले कर्मचारियों को भी उनके प्रबन्ध एवं संचालन संबंधी प्रशिक्षण स्वयं ही प्राप्त हो जाता है।

10. प्रबन्धकीय कार्यकुशलता में वृद्धि : भारतीय उद्योगों को बहुराष्ट्रीय निगमों एवं कम्पनियों से उच्च प्रबन्ध कुशलता का लाभ प्राप्त हुआ है और इनके सहयोग से भारतीय प्रतिस्पर्धी कम्पनियों एवं उद्योगों ने

अपनी प्रबन्धकीय कुशलता एवं प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को निरन्तर बढ़ाया है।